



অসমীয়া ভাষা, সাহিত্য-সংস্কৃতি আৰু  
মামণি ৰয়চৰ্ম গোস্বামী

সম্পাদনা | ড° তৰালি গঁগে

## সূচীপত্র

মামণি বয়ছম গোস্বামীর ‘দঁতাল হাতীর উঁয়ে খোরা হাওদা’ স্বাতী কিৰণ	১
মামণি বয়ছম গোস্বামীর উপন্যাসত নাৰীৰ আত্মপৰিচয়ৰ চেতনা প্ৰণৱ ফুকন ড° প্ৰাণ্তি ঠাকুৰ	২৩
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ ‘মামৰে ধৰা তৰোৱাল’ উপন্যাসৰ গদ্যশৈলী... ড° বৰ্ণালী বৰঠাকুৰ দীপেন নাথ	৩৩
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসৰ ভাষিক প্ৰসংগ বিচাৰ শান্তনা দুৱা সন্দিকৈ	৪৫
‘আধালেখা দস্তাবেজ’ঃ জীৱন বীক্ষাৰ ব্যতিক্ৰমী প্ৰয়াস ড° জ্যোতিময়ী ভট্টাচাৰ্য বন্তি কলিতা	৫৫
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ গল্পৰ নাৰী চৰিত্ৰ    ড° দীপালি গাঁগে	৬৪
নাৰীকেন্দ্ৰিক গল্প হিচাপে মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ... অবিন্দম বৰা	৭১
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ ‘সৎকাৰ’ গল্পত প্ৰতিফলিত সমাজ : ... দেৱৱৰত গাঁগে	৮০
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাস ‘নীলকণ্ঠী ব্ৰজ’ আৰু ... ড° পৱন চন্দ্ৰ দত্ত বিউতি বৰুৱা	৮৯
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ ‘দঁতাল হাতীৰ উঁয়ে খোরা হাওদা’... বিভাৰাণী দাস শেৱালি শইকীয়া বৰদলৈ	৯৯

মামণি বয়ছম গোস্বামীর 'দঁতাল হাতী'র উঁয়ে খোরা হাওদা'...	১০৭
নীতালি বৃতাগোহাই	
মামণি বয়ছম গোস্বামীর গঞ্জ 'যাত্রা' : এটি পর্যালোচনা	১১৩
বিজুমণি দত্ত	
মামণি বয়ছম গোস্বামীর 'দঁতাল হাতী'র উঁয়ে খোরা হাওদা'...	১২২
পদ্মকুমাৰী গঙ্গে	
মামণি বয়ছম গোস্বামীর ভাষাশৈলী : 'দঁতাল হাতী'র উঁয়ে...	১৩২
ড° নৱমী গঙ্গে	
মামণি বয়ছম গোস্বামীর উপন্যাসত শ্রমিকৰ শোষণ-বধনাৰ ছবিৰ প্রতিফলন	১৪২
তাত্ত্বপালি বাজকেঁৰৰ	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'অহিৰণ' উপন্যাসৰ বিষয়সাৰ : এক অৱলোকন	১৫৩
শ্যামলী দলৈ	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'তেজ আৰু ধূলিৰে ধূসৰিত পৃষ্ঠা'...	১৬৩
ড° পিকুমণি চুতীয়া	
মামৰে ধৰা তৰোৱাল উপন্যাসত প্রতিফলিত শ্রমিক শ্ৰেণীৰ...	১৭০
অঞ্জুমণি ফুকন	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'আধালেখা দস্তাবেজ' : এটি বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন	১৭৭
ড° তৰালী গঙ্গে	
সাহিত্যৰ সমাজতত্ত্বৰ আধাৰত 'দঁতাল হাতী'ৰ উঁয়ে খোরা হাওদা'ৰ...	১৮৬
দিপ্তী বৰুৱা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'থেং ফাৰ্থী তহচিলদাৰৰ তামৰ তৰোৱাল'...	১৯৬
বিশ্বদীপা দাস	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসৰ নাৰী চৰিত্র : এটি আলোচনা	২০৫
নিৰূপমা বড়া	
বিমৰিম বৰা বৰুৱা	
শেৱালী ডেকা	
বিনোদ কোৱৰ	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত মানৱতাবাদ	২১১
বিকুমণি গঙ্গে	

মামণি বয়ছম গোস্বামীর উপন্যাস 'দঁতাল হাতীর উঁয়ে খোরা হাওদা'ত...	২২১
দেবজিৎ দত্ত	
‘দঁতাল হাতীর উঁয়ে খোরা হাওদা’ উপন্যাসৰ বিষয়সাৰঃ এটি আলোচনা	২৩০
দিগন্ত ভৱালী	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'নীলকণ্ঠী ব্ৰজ' আৰু 'দঁতাল হাতীৰ উঁয়ে...'	২৪০
প্রতীম শইকীয়া	
জুৰী বৰুৱা	
সমীৰণ শইকীয়া	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত শ্রমিক সমাজঃ এক বিশ্লেষণাত্মক...	২৫৩
পাপৰি বৰা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'দঁতাল হাতীৰ উঁয়ে খোরা হাওদা' আৰু...	২৬১
যুগলজ্যোতি বৰা	
ছোৱাৰী শৰ্মা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত সমাজ জীৱনৰ চিত্ৰঃ এটি সমীক্ষা	২৬৯
জোনটি দুৱৰা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ চুটিগল্পঃ 'সংস্কাৰ' আৰু 'উদং বাকচ'...	২৭৭
সঞ্জীৱ কুমাৰ বৰা	
লাৰণ্য বৰা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ গল্পত সমাজ জীৱনৰ চিত্ৰ	২৮৭
মালামণি গোস্বামী শৰ্মা	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ গল্পত প্ৰকাশিত পুৰুষ চৰিত্ৰ — এক বিশ্লেষণ	৩০১
নয়নজ্যোতি ভূঞ্জ	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'উদং বাকচ'ঃ এটি চমু আলোচনা	৩০৯
দীপাৰাণী বৰুৱা	
বিমান আৰুৰো	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ গল্পত নাৰী চৰিত্ৰ	৩১৬
ডেইজী বুঢাগোহাঁই	
মামণি বয়ছম গোস্বামীৰ 'উদং বাকচ' গল্পত প্ৰতিফলিত নাৰী মনস্তত্ত্বঃ...	৩২১
পাঞ্চুৰিকা শইকীয়া	

মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত প্রতিফলিত নাৰী মনস্তাত্ত্বিক দৃষ্টিভঙ্গী নাচবিণ বেগম	৩৩০
মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত ব্যৱহৃত গদ্য ভাষা... প্ৰমোদ চন্দ্ৰ দাস	৩৪৬
Adha Lekha Dastavej : Healing Through Confession Krittika Gogoi	৩৬২
New woman in Dr. Indira Goswami's fiction:... Monsumi Sarma	৩৬৭
The female voice in the novels of Mamoni Roisom... Nandini Baruah	৩৭১
An Eco-Feministic Reading of Dr. Mamoni... Linashree Boruah Mamta Sharma Rima Rani Nath	৩৭৬
Status of Women in Mamoni Raisom Goswami's Novels Rinku Dutta	৩৮৩
Mamoni Raisom Goswami and Representation of... Namita Baruah Dilip Hazarika Deekshita Gohain	৩৮৯
Body, Desire, Sexuality and Widowhood Dr. Lukumoni Goswami Mr. Bhaskar Jyoti Hazarika	৩৯৬

# মামণি বয়চ্ছম গোস্বামীর উপন্যাসত সমাজ জীবনৰ চিত্রঃ এটি সমীক্ষা

জোনটি দুরবা  
হিন্দী বিভাগ

গোলাঘাট বাণিজ্য মহাবিদ্যালয়

## প্রস্তাবনা :

‘বামধেনু’ আলোচনীত (পঞ্চদশ বছৰ, দশম সংখ্যা, ১৯৬৩ চন) ইন্দৰা গোস্বামীৰ ২১ বছৰীয়া যি গৰাকী ছোৱালীয়ে ‘বীজাণু’ নামৰ এটি চুটিগল্প লিখি অসমীয়া সাহিত্যত আত্মপ্রকাশ কৰিছিল, সেইগৰাকী ছোৱালীয়েই পৰৱৰ্তী সময়ত মামণি বয়চ্ছম গোস্বামী নাম লৈ কেইবাখনো উপন্যাস লিখি বিশিষ্ট মননশীল উপন্যাসিক হিচাপে প্ৰথ্যাত হৈ পৰিছিল। ড° বীৰেন্দ্ৰ কুমাৰ ভট্টাচাৰ্যৰ পিছত জ্ঞানপীঠ বঁটাৰে সন্মানিত দ্বিতীয়গৰাকী অসমীয়া সাহিত্যিক আৰু অসমৰ প্ৰথমগৰাকী মহিলা লেখক ইন্দৰা গোস্বামীয়ে সৰুৰে পৰাই সৃষ্টিশীল ৰচনাত সপোননিৰেশ কৰিছিল। গল্পকাৰ হিচাপেও তেওঁৰ আসন উচ্চত। গতিকে তেওঁক সৃষ্টিশীল গদ্য-সাহিত্যৰ মহান লেখিকা ৰূপে একেষাৰতে কৈ থ'ব পাৰি। তদুপৰি তেওঁ এগৰাকী ভাৱ গবেষিকাৰাপেও প্ৰতিষ্ঠিত। মাধৰ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ সৈতে হিন্দী সাহিত্যৰ তুলসীদাসৰ ৰামায়ণৰ তুলনামূলক অধ্যয়ন গ্ৰহণ কৰিছে। এই বিদুষী মহিলা গৰাকীৰ এই আলোচ্য কাকতখনিত কেৱল উপন্যাসিকা হিচাপেহে আলোচনাৰ মাজলৈ অনা হৈছে।

বিশ্ব সাহিত্যত যিসকল লেখক স্মৰণীয় হৈ বৈছে তেওঁলোকৰ সাহিত্যকৰ্মৰ প্ৰধান লক্ষ্য আছিল মানুহৰ কল্যাণ সাধন। সকলো প্ৰকাৰৰ অন্যায়, অবিচাৰ,

A collection of seminar papers presented in a UGC sponsored national seminar organised by the department of Assamese, Furkating College, Edited by Dr. Tarali Gogoi & published by Furkating College in collaboration with Saraswati Prakashan, Golaghat.

---

সম্পাদিকা : ড° তৰালি গৈগে

প্রথম সংস্করণ : আগস্ট, ২০১৬

© ফুরকাটিং মহাবিদ্যালয়, গোলাঘাট

ISBN : 978-93-82976-64-6

বেচ : ২০০ টকা (সাধারণ সংস্করণ)  
৩৫০ টকা (পুথিভূল সংস্করণ)

বর্ণ বিন্যাস : সৃষ্টি প্রাফিকছ  
গুৱাহাটী - ০৩

মুদ্রক : আঙ্গিক প্রেছ  
আমবাৰী, গুৱাহাটী-১

---

*The responsibility for the facts stated, opinion, expressed and conclusion drawn are entirely that of the author & editor. The publisher is not responsible for them.*



# पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य

सम्पादक  
**डॉ. अनुशब्द**

## अनुक्रम

पूर्वोत्तर एवं मध्य भारत के आदिवासियों की परम्परा एवं उनके प्रश्न

—रमणिका गुप्ता 11

पूर्वोत्तर भारत की राखा जनजाति की साहित्यिक सम्पदा

—डॉ. अच्युत शर्मा 18

उपेक्षित प्रश्न : जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण

—प्रो. हेमराज मीणा 'दिवाकर' 30

मिसिंग जनजाति की लोक संवेदना

—डॉ. अनुशब्द एवं उन्मेषा कोंवर 34

न्यीशी जनजाति की वाचिक परम्परा

—डॉ. कुसुम कुंज मालाकार एवं चारु गोयल 44

भूमंडलीकरण तथा असम प्रान्त की भाषाओं एवं बोलियों के अस्तित्व का संघर्ष

—श्री कुल प्रसाद उपाध्याय एवं डॉ. जोनाली बरुवा 50

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन

(बोडो, राखा और कार्बी जनजातियों के विशेष सन्दर्भ में)

—पूजा शर्मा 58

राजबंशी/गोवलपारिया लोकगीतों में कोच-राजबंशी जनजीवन

—मरमी राय बरुआ एवं बण्ली बरदलै 73

असम के जनजातीय लोकनृत्य

—डॉ. परिस्मिता बरदलै 81

लोक-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय जीवन

(मिसिंग जनजाति के लोकगीतों के सन्दर्भ में)

—मीरा दास 86

पूर्वोत्तर के जनजातिय साहित्य में वैशिक चेतना —मनोहरमयुम यमुना देवी	96
कार्बो जनजीवन में लोकगीत : एक अध्ययन —डॉ. अब्दुल मान्नान	99
असम के लोकजीवन और मौखिक साहित्य एवं वाचिक लोकविद्या में निविड सम्पर्क —कंकणा सैकीया एवं गीतिका सैकीया	107
असमिया जनजीवन में लोककथाओं की भूमिका —श्रीमती जोनटि दुवरा एवं सुमन गगै	120
तिवा जनजाति का समाज और संस्कृति —जुपिटा पाटर	127
पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाओं का साहित्य —मीनाक्षी देवी	133
असम के समकालीन सांस्कृतिक समाज जीवन में नृगोष्ठीय चाह जनगोष्ठी की भूमिका —श्रीमती बणाली बैश्य	138
लोकगीतों में जनजातीय जीवन : मिसिंग जनजीवन के सन्दर्भ में —मालविका शर्मा एवं कसीरा जहाँ	145
जनजातीय समाज में नारी की स्थिति, मर्यादा, वेशभूषा और प्रसाधन सामग्री —करबी देवी	155
असमिया लोकगीतों में जनजातीय जीवन —श्री रितु बरा	160
लोक-साहित्य और आदिवासी जीवन —अनुराधा क्षेत्री	169
भारतीय लोकनाट्य रूपों में लोक-तत्व और शास्त्र (असम के 'अंकिया' नाट की रंगधर्मिता के सन्दर्भ में) —मनोज कुमार सील एवं संदीप कुमार सिंह	176
ठंगाल कछारी जनजाति का तोरा चिरा त्योहार और उनका संस्कार गीत : एक अध्ययन —डॉ. बाला लखेन्द्र	182

# असमिया जनजीवन में लोककथाओं की भूमिका

श्रीमती जोनटि दुवरा एवं सुमन गो

## प्रस्तावना

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, “लोककथा शब्द मोटे तौर पर लोक प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहृत होता रहा है, जो मौखिक या लिखित परम्परा से क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहे हैं।”

प्राचीन काल से ही लोककथा के प्रति मानव-मन का प्रबल आकर्षण रहा है। इसकी उत्पत्ति उतनी ही पुरातन है जितना इस धरती की गोद में मानव। अपने परिवेश के प्रति मानव मन में जो भय, कुंठा, कौतूहल हुए, समय के साथ मानव को जो सीख मिली, कल्पना-सागर में तैरते हुए उसे जो आनन्द प्राप्त हुआ उन सब का समावेश लोककथा में हो गया है। दादी-माँ की गोद में बैठकर पोते-पोतियाँ आज भी जी लगाकर कथा सुनते हैं। बच्चों को सुलाने के लिए माताएँ कथा सुनाती हैं। लोककथा सुनने का शौक किस में नहीं है? कदाचित् इसी लोकगाथा का आधुनिक रूप कहानी है जो सारे संसार के साहित्य में उपलब्ध है।

मौखिक रूप के अतिरिक्त ऋग्वेद से लोककथाओं का लिखित रूप प्राप्त होता है। विभिन्न ब्राह्मण-ग्रन्थों, उपनिषदों, पुराण-उपपुराण, वृहत्कथा, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र, हितोपदेश, बैताल-पचीसी, जातक-माला, जैन-कहानियाँ आदि इसी परम्परा की वाहक हैं। पश्चिमी देशों में भी फेबुल, फेयरी, फेबलियो, लीजेण्ड, मिथ आदि विभिन्न रूपों में लोककथाओं का प्रचलन है।

## विश्लेषण

भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की तरह असम में भी लोककथा की प्राचीन परम्परा रही है। नरकासुर-कामाख्या की पौराणिक-कथा के पूर्व भी कदाचित् अन्य लोककथाओं का प्रचलन प्राचीन कामरूप में रहा होगा। असमिया लोक-साहित्य का विपुल भण्डार लोककथाओं से परिपूर्ण है। धीरे-धीरे विद्वानों की दृष्टि इस दिशा में गयी है। फलतः



**वाणी प्रकाशन**

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा

अशोक राजपथ, पटना 800 004

फोन : +91 11 23273167 फैक्स : +91 11 23275710

[www.vaniprakashan.in](http://www.vaniprakashan.in)

[vaniprakashan@gmail.com](mailto:vaniprakashan@gmail.com)

[sales@vaniprakashan.in](mailto:sales@vaniprakashan.in)

**POORVOTTAR BHARAT KA JANJATIYA SAHITYA**  
*Edited by Dr. Anushabd*

ISBN : 978-93-5229-657-6

Criticism

© 2017 सम्पादक

प्रथम संस्करण

मूल्य : ₹ 450

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग  
करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मकबूल फ़िदा हुसेन की कूची से